आंतकवादः एक आलोचनात्मक विश्लेषण भारत के संदर्भ में (1990–2016)

राजनीतिक विज्ञान में पीएच.डी उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV'n डॉ. सपना गहलोत

शोधार्थी

JV'n वन्दना यादव

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, भारत
मार्च 2016

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	पृष्ठभूमि	3–4
2.	आतंकवाद का अर्थ एवं परिभाषा	5–7
3.	आतंकवाद की विशेषताएं	8–8
4.	आतंकवाद के प्रमुख उद्देश्य	9–9
5.	आतंकवाद एक जटिल समस्या	10–12
6.	उद्देश्य	13–13
7.	साहित्य का अवलोकन	14–16
8.	शोध प्रश्न	17–17
9.	शोध पद्धति	18–18
10.	अध्ययन की रुपरेखा	19–21
	(1) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
	(2) आतंकवाद की प्रकृति एवं कारण	
	(3) भारत में आतंकवाद की चुनौतियाँ	
	(4) भारत में आतंकवाद की समस्याएँ, प्रवृत्तियाँ एवं घटनाऐं (1990–2000)	
	(5) भारत में आतंकवाद की समस्याएँ, प्रवृत्तियाँ एवं घटनाऐं (2001–2016)	
	(6) भारत में आतंकवाद के प्रभाव एवं समाधान	
	(7) उपसंहार	
11.	संदर्भ ग्रंथ सूची	22–27
12.	सहायक ग्रंथ सूची	28–31
13.	वेब लिंक्स एवं मैगजीन्स	32–33

पृष्ठभूमि

आतंकवाद वर्तमान की ही समस्या नही है, अपितु इसके आरम्भिक संकेत हमें हजारों साल पहले ही आतंकवाद एक **वाद** के रुप में स्थापित हो चुका था लेकिन इसके बीज तो हिंसा के रुप में पहले से ही विद्यमान थे। दूसरों को दुःख दर्द देना, पीड़ा आदि पहुॅचाने का कृत्य हिंसा है। प्राचीन समय में भी चोर के हाथ कटवाना, जबरदस्ती अपनी बात मनवाना, लूट–पाट करना, युद्ध करना, अत्याचार आदि सभी हिंसा के ही पर्याय है। एक तरफ राम–राज्य जैसी व्यवस्था तो दूसरी ओर ताड़का जैसी असुर प्रवृत्तियॉ तो रावण द्वारा सीता का अपहरण, निरंकुश शासनाध्यक्षों के कारनामें जैसे– सम्राट अशोक द्वारा साम्राज्य विस्तार की नीति (युद्ध नीति) आदि में निर्दोष और भोले–भाले लोग और सामान्य जनता इसकी शिकार होती थी। ये सब किसी न किसी रुप में हिंसा के ही प्रतिरुप थे जो आज आतंकवाद के रुप में हमें दिखाई देता है। अर्थात् आतंकवाद की उत्पत्ति को हिंसा के रुप में देखा है क्योंकि आतंकवाद की आधारशिला हिंसा है। हिंसा का मूल मानव मन है। हिंसा की मनोवृत्ति ही हिंसा को जन्म देती है। हिंसा आतंकवाद की जननी है। अर्थात् आतंकवाद को हिंसा से अलग करना बेमानी होगी। इसी तरह से आतंकवाद एक आपराधिक मनोवृत्ति है तथा इसे मनोविज्ञान से अलग करके देखला गलत होगा।

आतंकियों द्वारा बच्चों को प्रशिक्षित करते हुए।

src- http://www.spiked-online.com/newsite/article/there-is-no-such-thing-as-a-child-terrorist/17233#.WIs1IFN97IU

रॉबर्ट फीडलेण्टर की मान्यता है कि ''**आतंकवाद**'' शब्द फ्रांस की क्रांति और **जैकोबिन्स** की तानाशाही से संबन्धित है। सर्वप्रथम ''आतंकवाद'' शब्द का उपयोग जैकोबिन क्लब की गतिविधियों का वर्णन करने के लिए किया गया था। फ्रांस की क्रांति के समय जैकोबिन रेन ऑफ टेरर (Raign of Terror) के नाम से जाना जाता था। अर्थात् है उस समय शासन के लोगों के द्वारा अत्यधिक हिंसा की जाती थी और निर्दोष लोगों को मारा जाता था। इसकी गतिविधियों की व्यवस्था के लिए आतंकवाद शब्द का प्रयोग किया गया था।

''धार्मिक आतंकवाद'' इजराइल के एक संगठन ''हागानाह'' जिसकी स्थापना जन्म से पूर्व ही 1920 में हो गई थी। इस संगठन को आतंकवाद का पितृ–सत्तात्मक संगठन माना जा सकता है।

आतंकवाद शब्द का प्रयोग ब्रेसेल्स में दण्ड–विधान को समेकित करने हेतु सर्वप्रथम 1931 में बुलाए गए तीसरे सम्मेलन में किया गया था।

संक्षेप में कह सकते हैं कि आतंकवाद की उत्पत्ति हिंसा के रुप में पहले हो चुकी थी जैसे – अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन.एफ.कैनेडी, भारतीय प्रधानमंत्रियों इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की नृशंस हत्या, 9/11 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, 26/8 मुंबई आतंकी हमला, अक्षरधाम मंदिर पर हमला आदि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उल्लेखनीय उदाहरण है।

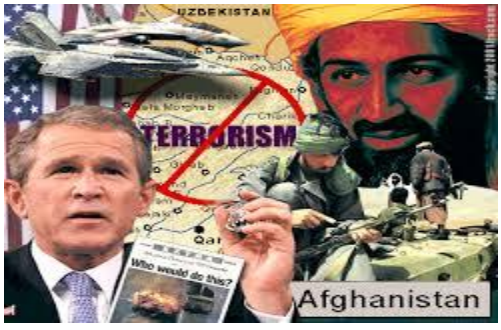

src- http://apwh.pbworks.com/w/page/7624792/Terrorism

आतंकवाद का अर्थ

ज्मततवतपेउ शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा की क्रिया (Verb) . Terror (टेरर) से हुई है जिसका अर्थ है – To Frighten (डराना)। इस शब्द से उत्पन्न शब्द "Terrorism" (आतंकवाद) है जिसका अर्थ ऐसा सिद्धांत है जो भय और हिंसा पर आधारित हो।

आतंकवाद के अनेक शब्दार्थ है जैसे – उग्रवाद, विद्रोहों, क्रांति, छापामार युद्ध, आंतरिक युद्ध आदि। हिंसा को आतंकवाद के अर्थ के रुप में प्रयोग किया जाता है।

src- http://globalsolutions.org/blog/terrorism

आतंकवाद की परिभाषा

आतंकवाद को एक परिभाषा में लाना उतना ही मुश्किल है जितना की एक बहती नदी को कुएं के दायरे में लाना क्योंकि आतंकवाद पर लोगों के विचार एकमत नही हैं, इस पर अलग–अलग विद्वानों द्वारा अलग–अलग मत व भिन्न–भिन्न परिस्थितियों तथा समय में व्यक्त किये गये हैं। सब एक–दूसरे से मेल नही खाते फिर भी इन सब में कुछ एकरुपता है।

हिंसक कृत्यों के उपयोग के लिए एक राजनीतिक लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करके एक तरीके के रुप में एक क्षेत्र में लोगों को डराने के लिए ही आतंकवाद का प्रयोग किया जाता है।

आतंकवाद पर निम्न परिभाषाएँ –

- **वेब्स्टर्स डिक्शनरी** में आतंकवाद को इस तरह से परिभाषित किया है – ''आतंकवाद, आतंक या आतंकवादी शब्द अपने स्वरुप में ही मिलते–जुलते शब्द है जिनको समझना जरुरी है।''
- **ब्लेक लॉ डिक्शनरी** : It is a Systamatic use of terror as a means of Coercion (यह बल प्रयोग अथवा दवाब बनाने के लिए आतंक का व्यवस्थित उपयोग है।
- **जेनकिन्स ने 1977** में ''आतंकवादी लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए आतंक व भय फैलाता है''
- **मौलिन ने 1977** में ''सैन्य तकनीक के रुप में आतंकवाद एम मनोवैज्ञानिक युद्ध का अस्त्र है।
- **जिनाम ने** ''आतंक हिंसा की पराकाष्ठा है।''

- **1973** में राष्ट्रसंघ द्वारा परिभाषित किया गया, ''आतंकवाद एक आपराधिक कार्य है जो राज्य के खिलाफ किया जाता है इसका उद्देश्य भ्रम पैदा करना है। यह स्थिति कुछ व्यक्तियों, समूहों या जन–सामान्य की भी हो सकती है। आतंकवाद पैदा करने वाली संस्था या व्यक्ति को आतंकवादी कहा जाता है।
- **एक.के.घोष** ने अपनी पुस्तक ''टेररिज्म वर्ल्ड अंडर सीज'' में ''आतंकवाद हत्याओं तथा विध्वंसकारी गतिविधियों का एक व्यवस्थिति प्रयोग है जो समुदायों अथवा सरकारों को भयभीत कर राजनैतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु किया जाता है। यद्यपि कोई भी परिभाषा अपने में परिपूर्ण नही मानी जा सकती है फिर भी आतंकवाद के कुछ सामान्य पक्ष हैं जो प्रत्येक दशा में समान रहते हैं।
- **आर.सी.मिश्रा** के अनुसार ''आतंकवाद एक प्रकार का हिंसात्मक कृत्य है जो सैद्धांतिक रुप से अनैतिक तथा अमानवीय है। यह अक्सर पिछड़ी हुई शक्ति द्वारा प्रयोग किया जाता है जो अपने आतंकवादी कृत्यों को अपने समर्थकों के हितों के परदों से ढकते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि आतंकवाद एक सामूहिक अपराध है जो आतंकवादी समूह द्वारा किसी व्यक्ति विशेष के विरुद्ध होता है। आतंक फैलाने तथा मनोवैज्ञानिक युद्ध की स्थिति उत्पन्न करने की तकनीक ही आतंकवाद है। आतंकवाद की रीढ़ की हड्डी है ''हिंसा''।

उक्त परिभाषाओं से आतंकवाद के निम्न तत्व स्पष्ट होते हैं –

1. हिंसात्मक कार्यवाही करना।
2. संगठित समूह एवं संगठन के रुप में कार्यवाही करना।
3. निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करना।
4. भय या डर की भावना पैदा करना।

आतंकवाद की विशेषताएं

- आतंकवाद राज्य व समुदाय के विरुद्ध होता है।
- आतंकवाद तार्किक चिंतन को रोकती है।
- आतंकवाद हिंसा की पराकाष्ठा होती है।
- आतंकवाद समाज की नैतिक सीमाओं से परे होता है।
- आतंकवाद का उद्देश्य डराना, भय उत्पन्न करना ही नही बल्कि लोगों को लम्बे समय तक आतंकित करना है।
- आतंकवाद असंतोष व अन्याय के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है।

आतंकवाद के प्रमुख उद्देश्य

- अपने उद्देश्य व आदर्शों का सघन प्रचार करना और जनता का अधिकाधिक समर्थन प्राप्त करना।
- धमकी, हिंसा, हत्या, अपहरण और सार्वजनिक सम्पत्ति को अन्धाधुन्ध नष्ट करके सरकार या शासन पर अपनी मांगों को मनवाने के लिए दबाव बनाना।
- शासन या सेना के मनोबल को गिराने का प्रयास करना व अपने कारनामों का अंजाम देना।
- देश में सुरक्षा, शांति व अखण्डता के लिए हर संभव खतरा उत्पन्न करना ताकि देश में भय, आतंक व असुरक्षा का वातावरण बना रहे।
- देश में अलगाववादी शक्तियों को भड़काना ताकि सरकार व जनता का सिर दर्द बने रहे।
- विरोधियों और मुखबिरों को किसी भी कीमत पर सहन या क्षमा न करना और उन्हे खत्म करने के लिए आवश्यक कदम उठाना।

आतंकवाद : एक जटिल समस्या

आतंकवाद मानवता का कठोर दुश्मन है जिसमें मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं का कोई स्थान नही है। संपूर्ण संसार में आतंकवाद का अघोषित युद्ध जारी है। आतंकवादी विघटनकारी समाज विरोधी लोगों का एक हिंसात्मक अभियान है जो संपूर्ण विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती है क्योंकि आज संपूर्ण मानवता का अस्तित्व खतरे में हैं। आतंकवादी कृत्य अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए राष्ट्र व समाज के विरुद्ध किया गया एक अनैतिक व घृणित कृत्य ही आतंकवाद है।

Src- http://www.news18.com/news/india/2611-mumbai-terror-attacks-pakistan-judicial-commissions-visit-to-india-delayed-by-4-days-636558.html

आतंकवाद एक ऐसी समस्या है जिसका न कोई राष्ट्र होता है , न कोई समाज, न कोई धर्म। यह तो केवल एक राक्षसी प्रवृत्ति है जिसके निशाना बनते हैं निर्दोष व भोले–भाले लोग, जिनका कोई दोष नही होता है।

आज आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्याओं में से एक है। पिछले दो–ढाई दशकों से भारत सहित दुनिया के अन्य देश भी इस समस्या से जूझ रहे हैं परन्तु यह समस्या दिनो–दिन बढ़ती जा रही है। इसका प्रमुख कारण हैः **कुछ लोगों की विकृत मानसिकता**।

आतंकवाद का उद्देश्य है लोगों में भय फैलाकर तथा हिंसा के माध्यम से अपने मत को प्रचारित करना या अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना। जो लोग इस उद्देश्य से कार्य करते हैं, उन्हे आतंकवादी कहा जाता है। जब कभी भी आतंकवादी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए धर्म या मजहब का सहारा लेते हैं ताकि अन्य सहधर्मी लोग भी उनके झांसे में आकर उनके कार्यों में सहयोग करें।

भारत आरंभ से ही आतंकवादियों के निशाने पर है। सन् 2008 का ''**मुंबई आतंकी हमला**'' इसका ज्वलंत प्रमाण है। मुंबई में उससे पूर्व भी कई आतंकवादी हमले हो चुके हैं। भारत के लोकतंत्र पर आघात करने के उद्देश्य से **''संसद भवन''** को भी निशाना बनाया गया था जिसे देश के रक्षकों नपे विफल कर दिया। कश्मीर में तो आतंकवादियों का घृणित कृत्य दशकों से जारी है।

इन सभी आतंकी घटनाओं को एक सुनियोजित षडयंत्र के अधीन अंजाम दिया गया है जिसका केन्द्र भारत के पडौसी देश पाकिस्तान में है। उसकी शाखाएं अफगानिस्तान, बांग्लादेश आदि विभिन्न देशों में फैली हुई है। आतंकवाद के राजनीतिक, सामाजिक एवं अन्य पहलू भी हैं जिन पर विचार करना आवश्यक है।

दुनिया के अधिकांश देश आतंकवाद को एक गंभीर समस्या मानते हैं, इसकी निंदा करते हैं तथा समस्या के समाधान के लिए एक दूसरे को सहयोग भी प्रदान करते हैं। इस समस्या को हल करना आसान नही है परंतु आपसी सहयोग, गुप्त सूचनाओं का आदान–प्रदान, आम लोगों की जागरुकता तथा राजनीतिक इच्छा शक्ति के बलबूते इस समस्या पर काबू पा सकते हैं। देश के प्रमुख प्रतिष्ठानों, हवाई अड्डों, तीर्थों, दर्शनीय स्थानों, महत्वपूर्ण इमारतों आदि में सुरक्षा की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि रणभूमि में लड़ने वाली सेना भी ज्यादा चुनौति इन आतंकवादियों का सामना करने में हैं क्योंकि आतंकवादी आमने–सामने वार नही करते हैं, वे चुपके से पीछे से वार करते हैं। अपनी जान की परवाह भी नही करते हैं।

आतंकवाद आज विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। आतंकवाद को समाप्त करना अकेले भारत के बस में नही बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का भी महत्व है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय समस्या की गंभीरता को समझकर खुला एवं उदार दृष्टिकोण अपनाएं तथा इसके समाधान के लिए हर संभव प्रयास करें।

उद्देश्य

- आतंकवाद की उत्पत्ति, कारक, कारण एवं प्रभावों का अध्ययन करना।
- भारत में आतंकवाद के वर्तमान स्वरुप का अध्ययन करना।
- भारत में आतंकवाद की चुनौतियां एवं भारत में घटी आंतकवादी घटनाओं पर प्रकाश डालना।
- सरकार, प्रशासन व पुलिस द्वारा आतंकवादी घटनाओं पर की गयी प्रतिक्रियाओ व प्रयासों का अध्ययन करना।
- भविष्य के लिए सरकार द्वारा आतंकवाद को रोकने व देश की सुरक्षा व समाधानो के प्रयासों का अध्ययन करना।

साहित्य का अवलोकन

- **गस मार्टिन** ने अपनी पुस्तक ''आतंकवाद को समझना, चुनौतियॉ, दृष्टिकोण और मुद्दों'' में आतंकवादी घटनाओं में आतंकवाद का ऑकलन करने की जरुरत है। विकसित समकालीन आतंकवाद के इन दोनो क्षत्रों में व्यापक खोज प्रदान करता है। पॉचवे संस्करण में गस मार्टिन ने आतंकवादी घटनाओं पर नई जानकारियों के साथ अध्ययन किया गया है। आतंकवादी वातावरण विकसित हो रहा है और उभरते आतंकवाद और सुरक्षा के दृष्टिकोणों को बताया है। लेखक गस मार्टिन दोनो अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू चुनौतियों और विकल्पों में से विचार विमर्श के साथ दुनिया भर में हिंसक उग्रवाद के ताजा विश्लेषण को बताता है। ध्यान केंद्रित चर्चाएं, समकालीन खतरों, नए आंदोलनों और प्रवृत्तियों और इन स्थितियों के लिए प्रतिक्रियाओं की प्रभावशीलता प्रदान की जाती है तथा नीतिगत विकल्पों के प्रभावों को अन्तर्राष्ट्रीय खतरों के परिदृश्यों के साथ ही क्षेत्रीय सुरक्षा और चुनौतियों और प्रतिक्रियाओं सहित घरेलु परिदृश्यों के संदर्भों के भीतर की चर्चा इस पुस्तक में की गई है।
- **डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव** द्वारा रचित पुस्तक, ''आतंकवाद का समकालीन परिदृश्य : स्वरूप एवं समस्याऐं'' में आज संपूर्ण विश्व को एक गम्भीर चुनौति पेश करने वाली सर्वाधिक घातक समस्या है, आतंकवाद है। बदलते परिदृश्य में आतंकवाद के विविध मुखौटों को वस्तुपरकता एवं विषयपरकता की दृष्टि से सम्पादित पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाली समकालीन समस्या आतंकवाद के विरूद्व विश्व के प्रमुख देशों को ईमानदार लड़ाई लड़नी चाहिए। यह समस्या अनवरत महाविनाशकारी और भयंकर रूप से क्रूर होती जा रही है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि हिन्दू और मुस्लिम समुदायों में व्यापक सहमति बनायी जाए क्योंकि आतंकी मात्र आतंकी है

वे न हिन्दू हैं न मुसलमान। आज इस बात की आवश्यकता है कि आपसी तनाव कम कर आतंकवाद को रोकने का प्रबल प्रयास किया जाए। एकजुटता ऐसी हो जिससे आतंकवादियों को ही नहीं वरन् उनके समर्थकों एवं संरक्षणदाताओं को बेपर्दा किया जा सके।

- **यासिर हुसैन** द्वारा रचित पुस्तक ''आतंकवाद के खिलाफ भारत का अंतहीन युद्ध'' में भारत के संदर्भ में आतंकवाद के मुद्दों का समाधान करने के लिए प्रयास करता है। देश में आतंकवाद की एक सिंहावलोकन पेश करते हुए यह लम्बाई में भारत, अलकायदा , आतंकवाद और तरीकों से निपटने की दिशा में भारतीय नीति के निर्माण में अमेरिका की भूमिका में आतंकवाद इंधन भरने में, प्रमुख आतंकवादी हमलों में पाकिस्तान की भूमिका की चर्चा है। सशस्त्रबलों द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन के मुद्दे के रुप में अच्छी तरह से आतंकवाद से निपट सकते हैं।

- **वन्दना अस्थाना** ने अपनी पुस्तक ''भारत में सीमा पार से आतंकवाद'': आतंकवाद रणनीतियॉ और चुनौतियॉ'' (जून 2010) में समकालीन आतंकवाद का तेजी से विनाशकारी क्षमता के साथ पूरी तरह से वैश्विक घटना के रुप में उभरा है। यह भारत में आतंकवाद का मूल है, पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ कश्मीर पर देश की प्रतिद्वन्द्विता के विशेष संदर्भ में बताते हैं।

आगे लेखक ने भारत में चालू आतंकवाद का मुकाबला करने की रणनीतियों में कमियों को दिखाया है। मौजूदा संघीय और राज्य की नीति के दृष्टिकोण, बुनियादी सुविधाओं और खूफिया और सुरक्षा एजेंसी समन्वय का परीक्षण किया गया है किसी तरह से अधिक प्रभावी ढंग से सीमा पार आतंक का मुकाबला करने में भारत की संस्थागत क्षमताओं, अन्तर एजेंसी समन्वय व अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में सुधार के लिए सिफारिशों के साथ समाप्त होती है।

- **<u>मनोहर लाल बाथम एवं शिवचरण विश्वकर्मा</u>** ने अपनी पुस्तक ''आतंकवाद चुनौती और संघर्ष'' में आतंकवाद पूरे विश्व में चाहे विकसित या अविकसित देशों में सभी जगह किसी न किसी रुप में अपना जाल फैला रहा है। भारत में भी आतंकवाद फैल रहा है। मानव जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। इस पुस्तक में आतंकवाद के हर पहलू को बताने का प्रयास किया गया है। आतंकवाद की उत्पत्ति एवं इतिहास, आतंकवाद की परिभाषा, विशेषताएं, कारण , भेद, स्वरुप, आतंकवाद का वर्तमान स्वरुप व प्रवृत्तियां तथा आतंकवाद, प्रतिवाद की जरुरत आदि। श्री मनोहरलाल बाथम व उनके मित्र ने इस पुस्तक में आतंकवाद से संबन्धित हर पहलु को बताने की कोशिश की है।

शोध प्रश्न

- आतंकवाद क्या है?
- आतंकवाद आज किस तरह से एक विश्वव्यापी समस्या बना?
- आतंकवाद के प्रमुख उद्देश्य क्या होते हैं?
- आतंकवाद के कारण क्या है? क्या आतंकवादी जन्म से ही आतंकवादी होते हैं?
- आतंकवाद एक गंभीर चुनौती है। कैसे?
- आतंकवाद के भेद क्या हैं। स्पष्ट करो?
- आतंकवाद के वर्तमान स्वरुप को बताईए।
- आतंकवाद की वर्तमान प्रवृत्तियां क्या है?
- आतंकवाद की पारम्परिक व आधुनिक तकनीकियां क्या है?
- आतंकवाद के समाधान क्या हैं?
- किसी तरह हम एक शान्त विश्व की स्थापना कर सकते हैं?

शोध पद्धति

- शोध में विभिन्न आयामों की व्याख्या ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, तुलान्तमक एवं विश्लेषणात्मक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जायेगा।
- शोध में प्राथमिक स्रोत (जैसेः–साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि, अनुसूचि विधि व पर्यवेक्षण विधि आदि) का भी प्रयोग किया जायेगा।
- साक्षात्कार विधि व प्रश्नावली विधि के द्वारा विचारो व आकडों का संकलन किया जायेगा।
- द्वितियक स्रोतो जैसे :– पुस्तके, पत्रिकाएँ, जनरलस व इंटरनेट आदि का समय–समय पर प्रयोग किया जायेगा।
- शोध को पूरा करने में पुस्तकालयों की भी सहायता ली जायेगी।
- शोध में सूचनाओं का आकंलन पूरी तरह से विश्वसनीय, तथ्यात्मक, गुणात्मक व विश्लेषणात्मक होगा।

अध्ययन की रुपरेखा

प्रस्तुत शोध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है :–

1. प्रथम अध्याय – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
2. द्वितीय अध्याय – आतंकवाद की प्रकृति एवं कारण।
3. तृतीय अध्याय – भारत में आतंकवाद की चुनौतियां।
4. चतुर्थ अध्याय – भारत में आतंकवाद की समस्यायें, प्रवृत्तियां, एवं घटनायें(1990-2000)
5. पंचम अध्याय – भारत में आतंकवाद की समस्यायें, प्रवृत्तियां, एवं घटनायें(2001-2016)
6. षष्ठम् अध्याय – भारत में आतंकवाद का प्रभाव एवं समाधान।
7. सप्तम अध्याय – उपसंहार।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

प्रथम अध्याय में आतंकवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को बताया जायेगा। आतंकवाद की उत्पत्ति, इतिहास एवं किन परिस्थितियों में आतंकवाद का जन्म हुआ व आतंकवाद को वैश्विक व भारतीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जायेगा, साथ ही आतंकवाद का अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्यों का भी अध्ययन इस अध्याय में किया जायेगा।

2. आतंकवाद की प्रकृति एवं कारण –

द्वितीय अध्याय में आतंकवाद की प्रकृति व आतंकवाद के कौन–कौन से कारण है जिससे की भारत में आतंकवाद का स्वरुप बढ़ता ही जा रहा है तथा आतंकवाद का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, आदि का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जायेगा।

3. भारत में आतंकवाद की चुनौतियां –

तृतीय अध्याय में आतंकवाद एक जटिल समस्या कैसे बनी तथा आतंकवाद की चुनौतियां कौन–कौन सी हैं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

4. भारत में आतंकवाद की समस्यांए, प्रवृत्तियां एवं घटनाएँ (1990–2000) –

चतुर्थ अध्याय में भारत में 1990 से 2000 तक के संदर्भ में आतंकवाद की समस्याएं कौन–कौन सी हैं तथा आतकंवाद की प्रवृत्तियां कौन–कौन सी हैं अर्थात आतकंवादी घटनाओं को अंजाम देने में अलग–अलग प्रवृत्तियों का उपयोग करते हैं आदि का अध्ययन विस्तार पूर्वक किया जायेगा। भारत में 1990 से 2000 तक कहाँ–कहाँ आतंकवादी घटनाऐ घटी व उनके परिणामों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

5. भारत में आतंकवाद की समस्यांए, प्रवृत्तियां एवं घटनाएँ (2001–2016) –

पंचम् अध्याय में भारत में 2001 से 2016 तक के संदर्भ में आतंकवाद की समस्याएं कौन–कौन सी हैं तथा आतकंवाद की प्रवृत्तियां कौन–कौन सी हैं अर्थात आतकंवादी घटनाओं को अंजाम देने में अलग–अलग प्रवृत्तियों का उपयोग करते हैं आदि का अध्ययन विस्तार पूर्वक किया जायेगा। भारत में 2001 से 2016 तक कहाँ–कहाँ आतंकवादी घटनाऐ घटी व उनके परिणामों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जायेगा।

6. भारत में आतंकवाद के प्रभाव एवं समाधान –

षष्टम् अध्याय में भारत में आतंकवाद का स्वरुप व प्रभाव क्या हुआ है तथा सरकार, प्रशासन व पुलिस द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध किये गए प्रयासों व समाधानो का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जायेगा।

7. उपसंहार –

सप्तम् व अन्तिम अध्याय में प्राचीन हिंसा किस तरह वर्तमान में आतंकवाद का स्वरुप ग्रहण कर चुकी है, आतंकवाद किस तरह से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, जिहादी आदि परिदृश्य पर अपना प्रभाव डालती है, का अध्ययन किया जायेगा। अंत में यही निष्कर्ष है कि यदि कोई समस्या है तो उस समस्या का समाधान भी होता है इसलिए आतंकवाद एक गंभीर समस्या है पर इसके समाधान भी हैं। भारत में एक आतंकवाद एक गंभीर स्वरुप ग्रहण कर चुका है सरकार व प्रशासन द्वारा आतंकवाद को समाप्त करने के समाधानो के साथ विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जायेगा। आतंकवाद जैसी समस्या केवल भारत की समस्या नही है बल्कि पूरे विश्व की समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक मंच पर आ जाऐ ंतो आतंकवाद जैसी समस्याओं का जड़ से उखाड़ कर फैंक सकते हैं तथा एक शान्त विश्व की स्थापना कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 **अडलूरी सुब्रमण्यम राजू** – ''दक्षिण एशिया में आतंकवाद : भारतीय परिदृष्य से भारत अनुसंधान प्रेस नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2004, कुल पृष्ठ 469, भाषा– अंग्रेजी

2 **अर्चना उपाध्याय** – ''भारत की नाजुक सीमाः पूर्वोत्तर भारत में आतंकवाद की गतिशीलता'', आई.बी.टौरिस, प्रेस लंदन, संस्करण वर्ष 2009, कुल पृष्ठ 336, भाषा– अंग्रेजी

3 **अशोक भट्ट** – ''वैश्विक आतंकवाद'', लोटस प्रेस, संस्करण वर्ष 2007, कुल पृष्ठ 312, भाषा–अंग्रेजी

4 **उपदेश कुमार व मानस कुमार मण्डल** – ''समझौता आत्मघाती आतंकवाद : मनोवैज्ञानिक डायनेमिक्स'' सेज पब्लिकेशन प्रा.लि., संस्करण वर्ष 2014, कुल पृष्ठ 300, भाषा–अंग्रेजी

5 **ए.के.लाल.** – ''नव आतंकवादः एक भारतीय अनुभव, ज्ञानः:, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2005 , कुल पृष्ठ 400, भाषा–अंग्रेजी

6 **एम.जी.चितकर** – ''आतंकवाद का मुकाबला'', ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, संस्करण वर्ष 2003 , कुल पृष्ठ 570, भाषा–अंग्रेजी

7 **एस.बी.त्यागी** – ''आतंकवाद के लिए भारतीय रिस्पांस'', द

जरनल ऑफ फिस्म, सी.एस.सी. संस्करण वर्ष 2014, भाषा–अंग्रेजी

8 **गस मार्टिन** – ''आतंकवाद को समझना, चुनौतियॉ, दृष्टिकोण और मुद्दे'', लॉस एंजिल्स, सी.एः बाबा, संस्करण वर्ष 2012 , कुल पृष्ठ 616, भाषा– अंग्रेजी

9 **जयदीप सैकिया** – ''अन्तर्राष्ट्रीयकरण के आतंकवादी पैटर्न्स'' सेज पब्लिकेशन प्रा.लि. नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2009, कुल पृष्ठ 316, भाषा–अंग्रेजी

10 **जॉन अपडाइक** – ''आतंकवादी नेटवर्क, अल्फ्रेड ए. नॉफ, संस्करण वर्ष 2006, कुल पृष्ठ 310, भाषा–अंग्रेजी

11 **जीन.ई.रोजनफेल्ड** – ''आतंकवाद की पहचान और वैधताः चार लहरें सिद्धांत और राजनीतिक हिंसा'' न्यूयॉर्कः रुटलेज, संस्करण वर्ष 2011, कुल पृष्ठ 272, भाषा–अंग्रेजी

12 **जेम्स सीमेन्ट** – ''विश्व आतंकवादः पोस्ट 9/11 काल के लिए प्राचीन काल से राजनीतिक हिंसा एक विश्वकोष में'' एम.ई.शार्पी(द्वितीय संस्करण–तीन खण्डों में) संस्करण वर्ष 2011, कुल पृष्ठ 1016, भाषा– अंग्रेजी

13 **जेसिका स्टर्न और जे. एम. बर्जर** – ''आई.एस.आई.एस. : आतंक के राज्य'', लंदन यूनाईटेड किंग्डम, संस्करण वर्ष 2015, कुल पृष्ठ 416, भाषा–अंग्रेजी

14 **डॉन डेलिलो** – आतंकवाद, मीडिया और उपन्यास के आचार'', आई.बी.टौरिस कं., लंदन, संस्करण वर्ष 2012, कुल पृष्ठ 264, भाषा–अंग्रेजी

15 **डॉ. प्रेम महादेवन** – ''भारत में आतंकवाद की राजनीति'', आई.बी. टौरिस कं., लंदन, संस्करण वर्ष 2011, कुल पृष्ठ 320, भाषा–अंग्रेजी

16 **डॉ. सरनजीत और जी. आई. एस.संधू** – ''भारत में आतंकवाद विरोधी कानून'' संस्करण वर्ष 2014 , कुल पृष्ठ 205, भाषा–अंग्रेजी

17 **डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव** – ''आतंकवाद का समकालीन परिदृश्यः स्वरुप एवं समस्याएं, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2011, कुल पृष्ठ 303, भाषा–हिन्दी

18 **तमारा हेराथ** – ''आतंकवाद में महिलाः लिट्टे के प्रकरण'' बाबाः लॉस एंजिल्स, सी.ए. संस्करण वर्ष 2012, कुल पृष्ठ 264, भाषा–हिन्दी

19 **नागेन्द्र सिन्हा** – ''26/11 के बलिदानी'' आकांक्षा प्रकाशन लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2013 , कुल पृष्ठ 280, भाषा–हिन्दी

20 **पाल लालकृष्ण देवी एस.** – ''सामाजिक विज्ञान के लिए आतंकवाद प्रतिरोध : टुकड़ों को एक साथ लाना'', सांता मोनिका, सी.ए.: रैड, संस्करण वर्ष 2009 , भाषा–अंग्रेंजी

21 **पीटर आर.न्यूमैन** – ''पुरानी और नई आतंकवाद'' , मालदा एम.ए.

पॉलिटी प्रेस, कुल पृष्ठ 204, भाषा–अंग्रेजी

22 **ब्रिजिट एल.नकोस** – ''आतंकवाद और आतंकवाद'' बोस्टन एम.ए. लांगमैन (चौथा संस्करण) संस्करण वर्ष 2011, कुल पृष्ठ 352, भाषा–अंग्रेजी

23 **ब्रूस हॉफमैन** – ''आतंकवाद के अंदर'', न्यूयॉर्क कोलम्बिया यूनि. प्रेस, संस्करण वर्ष 2006, कुल पृष्ठ 456, भाषा–अंग्रेजी

24 **म्नोहरलाल बाथम एवं शिवचरण विश्वकर्मा** – ''आतंकवाद चुनौति और संघर्ष'', मेघा बुक्स नवीन शाहदरा दिल्ली, संस्करण वर्ष 2003, कुल पृष्ठ 175, भाषा–हिन्दी

25 **मार्क सगेमन** – ''आतंकी नेटवर्क को समझना'' फिलाडेल्फिया, पी.ए.: पेन्सिल्वेनिया प्रेस, संस्करण वर्ष 2004, कुल पृष्ठ 232, भाषा–अंग्रेजी

26 **मेजर जनरल विनोद सहगल** – ''अंन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद'' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण वर्ष 2006, कुल पृष्ठ 232, भाषा–हिन्दी

27 **यासिर हुसैन** – ''आतंकवाद के खिलाफ भारत का अंतहीन युद्ध'' रेडवर्थ पब्लिकेशन प्रा.लि., संस्करण वर्ष 2013, कुल पृष्ठ 246, भाषा – अंग्रेजी

28 **रघुरमन** – ''हरेक युद्ध'' रणनीति, सुरक्षा और भारत में आतंकवाद'' रैंडम हाउस इंडिया प्रेस, कुल पृष्ठ 240, भाषा–अंग्रेजी

29 **रविन्द्र जुगरान** – ''रक्तरंजित जम्मू–कश्मीर'' ज्ञान गंगा

दिल्ली, संस्करण वर्ष 2001, कुल पृष्ठ 234, भाषा–हिन्दी

30 **रिचर्ड जैक्शन और सैमुअल जस्टिन** – ''आतंकवाद पर समकालीन बहस'' न्यूयॉक रुटलेज, संस्करण वर्ष 2001, कुल पृष्ठ 240, भाषा–हिन्दी

31 **वंदना अस्थाना** – ''भारत में सीमा पास से आतंकवादः आतंकवाद की रणनीतियां और चुनौतियां'', पब्लिशिंग प्रोग्राम ए.सी.डी.आई.एस. (आर्म कंट्रोल डिसर्मामेन्ट एण्ड इंटरनेशनल सेक्यूरिटी) संस्करण वर्ष 2010, भाषा–अंग्रेजी

32 **वाल्टर एंडर्स और टोड सैंडलर** – ''आतंकवाद की राजनीतिक अर्थव्यवस्था'', न्यूयॉर्क कैम्ब्रिज यूनि. प्रेस, संस्करण वर्ष 2006, कुल पृष्ठ 294, भाषा–अंग्रेजी

33 **वासुदेव महापात्रा** – ''आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई'' , संस्करण वर्ष 2014, भाषा– अंग्रेजी

34 **विवके चड्ढा** – ''आतंकवाद का जीवनः आतंकवाद वित्त मुकाबला'', कुल पृष्ठ 258, भाषा–अंग्रेजी

35 **वेद मारवाह** – ''अशिष्ट वार्सः भारत में आतंकवाद की विकृति, सेंटर फार पॉलिसी रिसर्च, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 1995, कुल पृष्ठ 472, भाषा – अंग्रेजी

36 **शारदा जैन** – ''अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और विश्व राजनीति'', दीप और दीप नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2013, कुल पृष्ठ 416,

भाषा–अंग्रेजी

37 शिवानी रसवान – ''सीमा पार आतंकवाद भारत में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के संदर्भ में'', इंडिया विज बुक्स प्रा. लि. नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2014, कुल पृष्ठ 244, भाषा–अंग्रेजी

38 सत्यपाल डांग – ''पंजाब में आतंकवाद'', हर आनंद पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2000 , (एन.एच.आर.सी. उदारीकरण) कुल पृष्ठ 412, भाषा–अंग्रेजी

39 सिमरन सोढी – ''26/11 दिल अनसुनी आवाजें भेजी'', संस्करण वर्ष 2009 , भाषा–अंग्रेजी

40 सुब्रमण्यम स्वामी – ''भारत में आतंकवादः भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए शक्ति संतुलन की एक रणनीति'' , हर आनंद प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 2008, भाषा–अंग्रेजी

सहायक ग्रंथ सूची

- अब्दुल्ला मंसूर – आतंकवाद का सम्प्रदायीकरण
- अंजली कुमार झा – ''आतंकवाद के विविध दृष्टिकोण''
- आभा अवस्थी – ''हिंसा और आतंकवाद के आयाम''
- आर.के.सान्याल – ''आतंकवाद और निःशस्त्रीकरण''
- उदय माहूरकर – ''खौफनाक होता नया चेहरा''
- ए.एस.सक्सेना – टेररिज्म हिस्ट्री एण्ड फैक्ट्स इन द वर्ल्ड एण्ड एशिया, अभिनव पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- एच.बी.मिश्रा – ''आंतकवाद शांति के लिए खतरा और सद्भाव'', लेखक प्रेस, नई दिल्ली, 1999 में।
- एम.राजनिक्कन – ''साइकोलॉजिकल पर्सपैक्टिव ऑफ इन्टरनेशनल टेररिज्म
- एस.ओम प्रकाश – ''भारत में आतंकवाद'' मानस प्रकाशन नई दिल्ली, 1998 में
- एस.के. घोष – ''टेररिज्म वर्ल्ड अंडर सीज'', आशीष पब्लि. हाउस, नई दिल्ली, 1995 में।
- कनवर लाल वैसनिक – ''आतंकवाद के विविध आयाम''
- कोर्बन पैट्रिक – ''आतंक का असली गुनहगार''
- ग्रीन बर्ग पीटर – ''आतंक के आसान शिकार''
- जार्ज सारस – ''राजनीतिक आर्थिक आतंकवाद''
- जे.एम.मार्टिन एवं ऐने टोमाने– ''अन्तर्राष्ट्रीय अपराध''
- जे.सी.स्मिथ – ''लीगन कंट्रोल ऑफ इंटरनेशनल टेररिज्म''
- डॉ. अमित जैन – ''आतंकवाद एक जटिल समस्या''
- डा.ए.पी.शुक्ला एवं राहुल मिश्र– ''राष्ट्रीय सुरक्षा की समसामयिक समस्याएं, राधा

पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली

- डॉ. एम.एम. लवानिया एवं शशि के.जैन. – ''भारत में राजनीतिक समस्याएं, रिसर्च पब्लि. जयपुर एण्ड दिल्ली
- डॉ. कृष्ण कुमार रत्तु – ''आतंकवाद का नया चेहरा''
- डॉ. जैफरी – ''आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक युद्ध''
- डॉ. मनमोहन सैहगल – ''आतंकवाद''
- डॉ. मनीषा सिंह – ''आतंकवाद एवं विश्व शांति के नये दृष्टिकोण''
- डॉ. मुंशराम शर्मा – ''भारत में आतंकवाद की समस्या''
- डॉ. नागेन्द्र सिंह – ''अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद और साहित्य''
- डॉ. राजकुमार – ''आतंकवाद और समाधान'' , अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- डॉ. राजवीर सिंह – ''अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद''
- डॉ. सुरेश चन्द – ''आतंकवाद''
- तनवीर जमाल किजमी – ''आतंकवाद के विविध आयामः समस्या एवं समाधान''
- तारा कार्था – ''आतंक के उपकरणः हल्के हथियार और भारत की सुरक्षा'', ज्ञान विश्व, नई दिल्ली, 1995 में।
- दीपक गुप्ता – ''अंडरस्टैंडिंग टेररिज्म एण्ड पॉलिटिकल वाइलैंस द लाईफ साईकल ऑफ बर्थ, ग्राथ एण्ड ट्रांसफारमेशन एण्ड डिमाइज
- देवमणि पाण्डेय – ''आतंकवादः एक तात्विक विवेचन प्रगति मंजूषा, इलाहाबाद
- नौनिहाल सिंह – ''द वर्ल्ड टेररिज्म इंन इंडिया''
- नारायणन वी.एन. – ''आतंक के साथ भेंटः पंजाब के अशांत दशक रावत प्रकाशन, जयपुर, 1996 में।
- पवन कुमार सिंह – ''कट्टरता, आतंकवाद और दंगे''
- प्रतीप के.लहरी – ''भारत में साम्प्रदायिक दंगे और आतंकवाद''
- प्रिया एम.जेकिन्स – ''इन्टरनेशनल टेररिज्म एण्ड वर्ल्ड सिक्यूरिटी''
- प्रो. ममता सिंघई – ''आतंकवाद और हमारी एकता'', रिसर्च जर्नल

ऑफ सोशल साइन्सेज, रीवा

- वारडला ग्रांट – ''राजनीतिक आतंकवाद''
- विरेन्द्र कुमार गौड़ – ''सुरक्षित आतंकवाद और अपराध''
- वीरेन्द्र कुमार गौड़ – ''आतंक की चुनौती''
- विवेक सक्सेना – ''नक्सली आतंकवाद''
- वी.पी.साहा – ''सीमा पार आतंकवादः कश्मीर विवाद का अन्तर्राष्ट्रीयकरण'', हर आनंद, नई दिल्ली, 1996 में।
- श्रीधर द्विवेदी – ''आतंकवादः स्वरुप और विस्तार'' , 1992 में, नई दिल्ली।
- सलीम जीवा व डॉनाल्ड जे. हुक्का – ''मार्जिन ऑफ टेररः ए रिपोर्टर स ट्वंटी इअर ओडिसी कवरिंग द ट्रेजिडी ऑफ द एअर बाम्बिंग
- संजय गुप्ता – ''आतंक का तमाचा''
- सुखवर्ष करवर तन्हा – ''आतंकवाद की लपटें''
- प्रो. मधुसूदन – ''राष्ट्रीय एकता और आतंकवाद''
- फ्रेडरिक डेविड – ''अन्तर्राष्ट्रीय कानून में आतंकवाद''
- बाबूराव देसाई – ''आतंकवाद''
- मानचंद खंडेला – ''अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद''
- मारथा करेन्सा – ''टेररिज्म लेजिटिमेसी एण्ड पावर''
- राघवेन्द्र किशोर – ''आतंकवाद एवं भारत के सम्मुख खतरे''
- राजीव शुक्ला – ''आतंकवाद के दो चेहरे''
- रामजी यादव – ''सामाजिक समस्याएं''
- रे. मेजर जनरल अर्जुन – ''आतंकवाद के मनोविज्ञान'' कश्मीर डायरी मानस प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997 में।

- रंजना अरोड़ा – ''हिंसा, साम्प्रदायिकता और भारत में आतंकवादः राजनीति के अपराधीकरण की ओर'', दीप और दीप प्रकाशन, नई दिल्ली , 1995 में ।

- डॉ. चंदर अरोड़ा – ''आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए रणनीतियां, हर आनंद प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999 में।
- सुरभी उपाध्याय – ''भारत में आतंकवाद''
- सरकार भास्कर – ''उग्रवाद और आतंकवाद से निपटनाः कार्यवाई के लिए खाका'' (नई दिल्लीः विजन किताबें 1998)
- हिमांशु द्विवेदी – ''आतंक सीमा पार'', श्री प्रकाशन, बिलासपुर
- हैरी हैण्डरसन – ''ग्लोबल टेररिज्म'' जैको पब्लिकेशन मुंबई, 2003 में।

BIBLIOGRAPHY

Links

1. http://www.ijims.com/uplpoads/696780174f19c7634e08zppd_2014411.pdf
2. http://creative.sulekha.com/the-root-cause-of-terrorism-in-india_357908_blog
3. http://www.yourarticlelibrary.com/essay/terrorism/terrorism-in-india-charateristics-objectives-and-perspectives/44007/
4. http://www.cdsrd.org/userfiles/19_%20Col_%20Rawat.pdf
5. http://www.lawctopus.com/academike/cross-border-terrorism-home-grown-militancy/
6. http://maypalo.com/2010/11/17/effective-ways-to-reduce-terrorism
7. http://jpr.sagepub.com/content/51/2/257.full
8. http://www.indiabix.com/group-discussion/terrorism-in0india/
9. http://www.jpcs.org/research-paper-index-1html
10. http://www.brookings.edu/research/articles/2008/11/30-india-terrorism-riedel
11. http://www.academia.edu/5803603/Research_Proposal_The_Impact_of_terrorism_on_indo-pak_peace-process
12. http://topics.nytimes.com/top/news/international/countiesandterrirories/india/terrorism/index.html
13. http://www.anyikshikijournal.com/viewpaper.aspx?pcode=0063851b-2d90-4051-8598-8d3d4332d14a
14. http://epu.ac.at/fileadmin/downloads/research/rp_0209.pdf

15. http://rand.org/content/dam/rand/pubs/papers/206/P6563.pdf

16. http://ni-u.edu/ni_press-pdf-Global_War_on_terrorism.pdf

17. http://nbuviap.ua/images/86/douvagi.pdf

18. http://www.readwhere.com/publication/1224/global_terrorism

19. http://www.cfr.org/india/terrorism-indo-pakistani_escalation/p21042

20. http://www.quora.com/what_are_the_best_books_on_terrorism

21. http://en.wikipedia.list_of_terrorist_incident_in_india

22. http://en.wikipedia.org/wiki/terrorism_in_india

23. http://www.slideshere.net/college/terrorismwhatwherewhyhow

24. http://www.powershow.com/view/44ef7MGRHN/terrorism_in_the_powerpoint_ppt _presentation.

25. http://www.ndtv.com/topic/terrorism_in_india/news

MAGAZINES

- The times of india magazine
- India today magazine
- Indian Defence Review
- Current international news magazines
- The hindu magazine
- Tehelka magazine
- Current affairs magazines